INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES
Peer Review, Refereed, Biannual, Multiple Language (Hindi & English), Social Science Journal, Open Access Journal
ISSN: 3107-5096(ONLINE)
VOL. 1, ISSUE 2 (DECEMBER)2025

लोक कथाओं के संवर्धन में मीडिया की भूमिका का अध्ययन (हिन्दी भाषी राज्यों के विशेष सन्दर्भ में)

डा० मनोज कुमार श्रीवास्तव
सह आचार्य
तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

सुन्दर सिंह (शोधार्थी)
तिलक पत्रकारिता एवं जनसंचार स्कूल
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
Doi: https://doi.org/10.5281/zenodo.17627761
PP:87-93

ARTICLE INFO
Received:17-09-2025
Revised:09-10-2025
Accepted: 15-11-2025
Published:01-12-2025

शोध सार

समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धताओं के आलोक में मीडिया लोक मत के सृजन और उसको दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज में शांति, सौहार्द, समरसता और समन्वय की भावना विकसित कर मीडिया बहुआयामी स्वरूप में हम सभी के समक्ष उपस्थित होता है। वहीं लोक कथा से आशय किसी मानव समाज की उस साझी विरासत से है जो कथाओं के विभिन्न स्वरूपों में अभिव्यक्त होती है। ऐसे में मीडिया और लोक कथा एक दूसरे के पूरक होते हैं। लोक कथाओं के संवर्धन में मीडिया एक उत्प्रेरक की भूमिका निभाता है। समय के साथ ये सिद्ध भी हुआ है। पंचतंत्र की जातक कथाएं हों या फिर वेद, पुराण आज डिजिटल मीडिया के माध्यम से हमारे पास सबके डिजिटल फुट प्रिंट मौजूद हैं।
बीज शब्द– बहुआयामी स्वरूप, जातक कथा, लोक कथा, सिनेमा, न्यू मीडिया

प्रस्तावना

प्रथम दृष्टया लोक कथाओं का भी लोक गीतों की तरह मानव समाज को परंपरागत वसीयत के रूप में पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरण होता रहता है। इनके किसी मूल या उद्‌गम स्रोत के विषय में पूरी प्रामाणिकता से कुछ कहा जाना संभव नहीं है। चौपाल में बैठकर अर्जित किए अनुभव दादी, नानी से होते हुए अनेक संस्करणों, प्रवृत्तियों और चरित्रों से विकसित होते गए। एक ही लोक कथा विविध प्रसंगों, संदर्भों

तथा अंचलों में नए–नए स्वरूप ग्रहण करती चली गई। कालांतर में मीडिया के स्वरूपों में आए परिवर्तन के साथ ही लोक कथाओं की पहुँच भी व्यापक होती गई। भारतीय चिंतन परंपरा में परलौकिक सुख को लौकिक सुख से भी उच्च स्थान प्राप्त है, ऐसे में चीर प्राचीन काल से हिन्दी लोक कथाओं की मुख्य विशेषता इनका सुखांत होना है। इनका मुख्य उद्देश्य श्रोताओं में लोक मंगल की भावना का उदय, धर्म, मर्यादा एवं कर्तव्य पालन भाव जागृत करना तथा मानव कल्याण ही रहा है। इनका स्वरूप मुख्यतः धार्मिक, उपदेशात्मक, प्रेम प्रधानता, जातीय पात्रों का नायकत्व तथा मनोरंजन था।

मीडिया ने लोक कथाओं के संवर्धन में महति भूमिका का निर्वहन किया है। समाचार पत्रों में जहां विशेष पृष्ठों और कॉलमों में लोक कथाओं को स्थान दिया जाता रहा वहीं पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन के साथ ही विशेषांक भी प्रकाशित हुए। प्रस्तुत शोध पत्र मीडिया के विविध माध्यमों के योगदान की विस्तार से पड़ताल किए जाने का एक प्रयास है।

शोध पद्धति

शोध पत्र 'लोक कथाओं के संवर्धन में मीडिया की भूमिका का अध्ययन (हिन्दी भाषी राज्यों के विशेष सन्दर्भ में)' के लेखन में विवेचनात्मक पद्यति का उपयोग किया गया है। साथ ही शोध पत्र द्वितीयक शोध स्रोत आधारित है, जिनमें विविध पुस्तकें, समाचार पत्र, पत्रिका तथा इंटरनेट सम्मिलित है।

शोध उद्देश्य

भारत के हिन्दी भाषी राज्यों में लोक कथाओं के संवर्धन में मीडिया की भूमिका का अध्ययन।

साहित्य समीक्षा

शोध पत्र 'लोक कथा परिभाषा, स्वरूप एवं वर्गीकरण' में लोक कथा को परिभाषित करते हुए शोधार्थी डा० संदीप कुमार कहते हैं कि, 'लोक साहित्य में लोक कथा का स्वरूप अत्यंत महत्वपूर्ण है। विषय–वस्तु की व्यापकता एवं रोचकता की दृष्टि से इसका मूल्य निसंदेह अवर्णनीय है। भारत लोक कथाओं का अनंत सागर है।' उनका मानना है कि लोक कथाओं में मुख्य रूप से मानव मन के सुख–दुख, रीति–रिवाज, आस्थाएँ, धार्मिक विश्वास, प्रेम व श्रृंगार भाव अभिव्यक्त होता है। कुमार, संदीप (सन् 2007) लोक कथाओं का वर्गीकरण।

प्रख्यात साहित्यकार वासुदेव शरण अग्रवाल पुस्तक 'कला और संस्कृति' में विस्तार से लोक कथाओं की विवेचना करते हैं। वे लोक कथा की परिभाषा इन शब्दों में देते हैं, 'लोक मानस ज्ञान को कहानी के रूप में ही स्वीकार करता है। जो ज्ञान कहानी के रूप में सरल नहीं, वह लोक मानस में नहीं पचता। मानव

जाति, बुद्धि का कितना ही विकास कर ले, वह प्रत्येक नई पीढ़ी में बाल भाव से ही जीवन चक्र का आरंभ करते हैं।' अग्रवाल, बी. (सन् 2002) भारतीय चित्रकला के मूल श्रोत. वाराणसी।

रणेंद्र जी के अनुसार, 'मनुष्य शास्त्र के तत्वज्ञों का कहना है कि मानव मन में जो शाश्वत बाल भाव समाया रहता है, उसकी भाषा, उसका साहित्य, उसकी भावाव्यक्ति कथा ही है।' रणेंद्र (सन् 2013) गायब होता देश।

सावित्री वर्मा के अनुसार, 'पुरानी कथाएं नया कलेवर धारण करके नए समाज की छाप लेकर नए रूप में प्रकट होती हैं और यही नवीनता इनका जीवन है।' वर्मा, सावित्री (सन् 2009) पुरानी कथाएं नई दिल्ली।

मूल आलेख

प्रिंट मीडिया और लोक कथाओं का संवर्धन

प्रिंट मीडिया भारत ही नहीं बल्कि विश्व में जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम है इस माध्यम में आने वाले जनसंचार के स्वरूपों में मुख्य रूप से अख़बार पत्र पत्रिकाएं लघु पत्रिकायें और छोटी मैग्जीन शामिल हैं। समाचार पत्र और पत्रिकाएँ काफी पहले से ही लघु कथाएं सांस्कृतिक कहानियाँ सांस्कृतिक किस्से और हमारी धार्मिक मान्यताओं से जुड़े किस्से समय समय पर प्रकाशित करते रहे हैं। इसका सबसे सटीक उदाहरण हमें रविवार अख़बार, आज अखबार और हंस पत्रिका में देखने को मिलता है।

भरत मुनि का नाट्यशास्त्र हो अथवा जातक कथाएँ या फिर अन्य कोई और लोक कथाएं या पौराणिक कथाएं इन सबकी जानकारी हमें सर्वप्रथम प्रिंट मीडिया के माध्यम से ही मिलती है और इस मीडिया ने अपनी इस परंपरा को आज भी बनाए रखा है. आज भी गोरखपुर की गीता प्रेस से कई धार्मिक पुस्तकें और कई लोक कथाओं पर आधारित साहित्य सामग्री प्रकाशित होती है जिसके प्रचार प्रसार से हमारी आने वाली पीढ़ी हमारी जड़ों से अवगत होती है।

बाल पत्रिकाओं के क्रम में नंदन, सुमन सौरभ, चम्पक, लोटपोट, बाल भारती, बाल हंस, बाल भास्कर, नन्हें सम्राट, हंसती दुनिया, स्नेह, बाल वाटिका, बाल वाणी, देवपुत्र, बच्चों का देश, बाल प्रहरी आदि बाल पत्रिकाओं ने लोक कथाओं के प्रसार में अमूल्य योगदान दिया है।

रेडियो और लोक कथाओं का संवर्धन

रेडियो और लोक कथाओं का संवर्धन रेडियो लोक कथाओं के संवर्धन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। रेडियो पर आने वाला रेडियो रूपक जिसके माध्यम से कहानियों, लोक कथाओं और लघुकथाओं

को श्रोताओं को सुनाया जाता है। रेडियो एक अच्छा माध्यम है जनमानस तक अपनी बात पहुँचाने का और हमारी सांस्कृतिक धरोहर को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रसार भारती द्वारा प्रसारित किए जाने वाले थ्ड गोल्ड और रेनबो पर ऐसे धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन श्रोताओं के लिए किया जाता है जिसमें हमारी सांस्कृतिक धरोहर कि मूल धारणा का अनुसरण होता प्रतीत होता है।

रेडियो रूपक भी एक अच्छा माध्यम है श्रोताओं तक अपनी बात पहुँचाने का रेडियो रूपक में प्रोग्रामर द्वारा भिन्न भिन्न प्रकार की रूपक बनाए जाते हैं, जिनमें धार्मिक सांस्कृतिक और लोक संस्कृति से जुड़े रूपक भी होते हैं रूपक के माध्यम से हम अपनी सांस्कृतिक और लोक पौराणिक मान्यताओं के बारे में रूबरू होते हैं क्योंकि रेडियो रूपक एक ऐसा माध्यम है। जिस माध्यम के द्वारा प्रोग्रामर एक बड़े ही अलग और रोचक ढंग से विषय से जुड़े बिंदुओं पर प्रकाश डालता है।

सिनेमा और लोक कथाओं का संवर्धन

सिनेमा को जन संचार के माध्यमों में से एक प्रमुख माध्यम माना गया है ऐसा इसलिए माना गया है क्यों की जनसंचार के अन्य सभी माध्यमों की तुलना में सिनेमा का प्रभाव दर्शकों पर सबसे गहरा और सबसे लंबे समय तक होता है. लोक कथाओं के संवर्धन में भी सिनेमा की भूमिका भी अग्रणी रही है। पूर्व के समय में राजा हरिश्चंद्र से लेकर एक लंबे समय तक सिनेमा पर धार्मिक पृष्ठभूमि और लोक साहित्य पर फिल्में बनती रही हैं. आज के समय में भी कुछ निर्देशकों द्वारा धार्मिक और सांस्कृतिक सिनेमा दर्शकों तक पहुंचाया जा रहा है. सिनेमा को समाज का आईना कहा जाता है सिनेमा में जनमानस की उन समस्याओं को उठाया जाता है जिसका सरोकार आम आदमी से होता है।

बदलते वक्त के साथ सिनेमा को भी अपने आप को बदलना चाहिए और सांस्कृतिक धार्मिक अथवा लोक साहित्य से जुड़ी फिल्म में और बनानी चाहिए ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी अपनी संस्कृति से अपने धर्म से भलीभाँति परिचित हो सके. हिंदी भाषा के सिनेमा के अलावा क्षेत्रीय भाषाओं में बनने वाले सिनेमा ने अपनी जड़ों को पूरी मजबूती के साथ पकड़े रखा है और लोक संस्कृति, लोक कला को घर घर तक अपनी भाषा के माध्यम में पहुंचाने का प्रयास किया है.

टेलीविजन और लोक कथाओं का संवर्धन

टेलिविजन जन संचार के सभी माध्यमों से सबसे ज्यादा प्रभावशाली माध्यम है। जब शब्दों के साथ दृश्यों के साथ आप अपनी बात को रखते हैं, तो वह बात ज्यादा प्रभावशाली रूप से दिखती है। हाल ही में राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को देशी नहीं बल्कि पूरे विश्व ने टीवी मीडिया के माध्यम से देख जाना और समझा. इसी के साथ टीवी पर कई ऐसे कार्यक्रम चलाए गए जिसमें हमारी धार्मिक मान्यताओं और रामायण के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया था. ऐसा केवल इसलिए संभव हो सका क्योंकि टीवी

मीडिया ने इसमें रूचि दिखाई और हमारी धार्मिक मान्यताओं से अवगत कराया. इसके अतिरिक्त इलेक्ट्रिक मीडिया के माध्यम से हम और हमारा समाज लंबे समय से महाभारत रामायण पंच तन्त्र श्रीमद्भगवद्गीता से जुड़े विभिन्न कार्यक्रम देखता आया है। इसी के साथ लोक कथाओं पर आधारित अन्य सीरियस भी बनते रहे हैं, इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि टीवीने हमारे समाज में बहुत बड़ा योगदान दिया है। टीवी ने लोगों को सूचित शिक्षित करने के साथ साथ ऐसा मनोरंजन दिया है, जो हमारी परम्पराओं आस्थाओं और लोक मान्यताओं से जुड़ा हुआ है। टेलिविजन की विश्वसनीयता इसलिए भी अत्यधिक है क्योंकि इसमें दृश्यों का इस्तेमाल किया जाता है, यही कारण है कि युवा तथा बच्चे अपने आपको इस माध्यम के सबसे ज्यादा करीब पाते हैं।

सोशल मीडिया और लोक कथाओं का संवर्धन

सोशल मीडिया ने लोक कथाओं के संवर्धन में सर्वाधिक भूमिका निभाई है। इसका सबसे सटीक उदाहरण हमें यूट्यूब के माध्यम से मिलता है, यूट्यूब पर हमारे पास वेद और पुराणों की सभी प्रतियां लिपियाँ और एनीमेशन के माध्यम से उपलब्ध हैं। संस्कृतियों और लोक कथा को आगे बढ़ाने में सोशल मीडिया ने बड़ी भूमिका निभाई है, जिसको हम इस तरह से समझ सकते हैं कि आज यूट्यूब पर जातक कथाओं के साथ साथ रामायण महाभारत और अन्य पुराणों पर आधारित कई अच्छे और महत्वपूर्ण वीडियो हमारे पास मौजूद हैं। इसके अलावा आज के दौर में कई कंटेंट बनाने वाले क्रिएयटर्स ने फेसबुक पर बच्चों के लिए काफी रोचक ढंग से वीडियोज बनाने शुरू किये हैं और साथ ही एनिमेशन का अच्छा प्रयोग करके हमारी संस्कृति और पौराणिक मान्यताओं को बड़े ही अच्छे ढंग से बच्चों तक और आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास किया है। इसी के साथ ही वॉट्सएप पर भी आज के दौर में हमारी जातक कथाओं पौराणिक मान्यताओं और लोक कथाओं को काफी ज्यादा प्रोत्साहन मिल रहा है. हमारी पुरानी पीढ़ी वॉट्सऐप के माध्यम से पुरानी परंपराओं और लोक कथाओं से हमारे आज के यूथ को अवगत करा रहे हैं.

इंटरनेट और लोक कथाओं का संवर्धन

लोक कथाओं के संवर्धन में आज के दौर में इंटरनेट ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंटरनेट ने हम सबको एक ऐसा स्थान दिया है जिसके माध्यम से हम घर बैठे देश दुनिया तक अपनी बात पहुँचा सकते हैं साथ ही दुनिया भर की जानकारी एक क्लिक में अपने लिए भी उपलब्ध करा सकते हैं। इंटरनेट की खोज सूचना क्रांति में एक बहुत बड़ा कदम था। इंटरनेट की सहायता से आज के दौर में हर एक मोबाइल फोन लगभग कंप्यूटर बन गया है। इंटरनेट की सहायता से कंटेंट बनाने वाले लोगों के लिए काफी सरलता हुई है।

इंटरनेट के माध्यम से फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, ल्वनज्नइम और वेबसाइट्स पर हमें भिन्न भिन्न प्रकार के कंटेंट देखने को मिलते हैं। इन कंटेंट में सूचना के साथ साथ धार्मिक, पौराणिक और लोक साहित्य से जुड़ी हुई भी बहुत सारी सामग्री उपलब्ध है। एक रिपोर्ट की मानें तो इंटरनेट का बाजार विश्व में सबसे तेजी से बढ़ने वाला बाजार है। इंटरनेट की सहायता से विश्व के तमाम कंटेंट को एक साथ लाया जा सकता है, यही कारण है कि लोक कथाओं और अन्य धार्मिक मान्यताओं को विश्व पटल तक पहुँचाने में इंटरनेट ने अग्रणी भूमिका निभाई है. राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम इंटरनेट की सहायता से भारत ही नहीं बल्कि विश्व भर के राम भक्तों ने बड़ी सरलता के साथ देखा। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि इंटरनेट के माध्यम से लोक कथाओं और पौराणिक मान्यताओं का विस्तार बहुत तेजी से हुआ है।

डिजिटल मीडिया और लोक कथाओं का संवर्धन

वर्तमान समय में प्रिंट व इलेक्ट्रोनिक मीडिया से ज्यादा अगर कोई मीडिया ग्रो कर रहा है तो वो है डिजिटल मीडिया। क्योंकि देश के 80 फीसदी लोगों के हाथों में स्मार्ट फोन है। जब तक खबर अखबार के पन्नों या टीवी स्क्रिन तक जाती है, उससे पहले ही डिजिटल मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुंच जाती है। डिजिटल मीडिया लोक कथाओं के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लोक कथाएं एक प्रकार से समाजिक और सांस्कृतिक माध्यम हैं जो विभिन्न जाति, धर्म, और क्षेत्रों की परंपराओं, सभ्यताओं और मूल्यों को दर्शाती हैं। डिजिटल मीडिया इस अनुपम विरासत को संरक्षित करने और प्रचारित करने का सबसे बड़ा माध्यम बनता जा रहा है। डिजिटल मीडिया अब चुनाव की हार जीत तक में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। क्योंकि यह ऐसा माध्यम है जो सबसे पहले समाचार को समाज के बीच ले जाने में सक्षम है। मीडिया लोक कथाओं को संरक्षित करने और सांस्कृतिक बचत करने का माध्यम बनती है। यह लोक कथाओं की महत्वपूर्णता को जागृत करती है और उन्हें लोगों के बीच विस्तारित करने में मदद करती है। इसके माध्यम से लोग अपनी परंपराओं और संस्कृति को समझते हैं और उन्हें आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किए जा सकते हैं। मीडिया लोक कथाओं को व्यापक रूप से प्रसारित करने में मदद करती है। यह उन्हें उनके आदिकाल से लाइव रखती है और लोगों तक पहुंचाती है जो इन कथाओं के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक बदलाव को समझने में सक्षम होते हैं। यही नहीं आजकल डिजिटल माध्यम इतना प्रभावी हो गया है कि किसी भी लोक कथा के बारे में पलभर में पूरी जानकारी जुटाई जा सकती है। इसलिए ये कहना भी गलत नहीं होगा कि अब प्रिंट, इलेक्ट्रोनिंक मीडिया से ज्यादा प्रभावी डिजिटल मीडिया गया है।

आधुनिक युग में डिजिटल मीडिया लोक कथाओं को संग्रहित करने का सबसे सुलभ माध्यम बन रही है। क्योंकि सिर्फ एक क्लिक पर सिर्फ डिजिटल मीडिया ही है जो आपको किसी भी लोक कथा से पल भर में परिचित करा सकती है। साथ ही उन्हें अध्ययन करने का माध्यम बनाती है। इसके माध्यम से

लोक कथाओं की सहेज, संवर्धित की जा सकती हैं और लोगों को उनके मूल्यों, भावों और संदेशों के साथ परिचित भी कराती है ।

निष्कर्ष: मैंने अपने इस शोध पत्र में यह जानने का प्रयास किया कि कैसे मीडिया की सहायता से लोक कथाओं और अन्य धार्मिक मान्यताओं का संवर्धन बड़ी तेजी के साथ हुआ है. मैंने अपने शोध पत्र में सोशल मीडिया, ज्ट पत्रकारिता, सिनेमा, रेडियो, प्रिंट पत्रकारिता और इंटरनेट की सहायता से यह समझाने और बताने का प्रयास किया है कि कैसे सांस्कृतिक परिपेक्ष्य को, धार्मिक, पौराणिक और लोक कथाओं को एक नए आयाम तक पहुँचाने में जन संचार ने बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज के समय में सूचना क्रांति बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है जिसके कारण ज्ञान का आदान प्रदान भी काफी तेजी से हुआ है। इस सूचना क्रांति के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों की परिणाम हमें देखने को मिले हैं, लेकिन लोक कथाओं के संवर्धन में मीडिया की भूमिका काफी महत्वपूर्ण और सकारात्मक ही रही है।

संदर्भ ग्रंथ

- *फिशर, अंस्र्ट (सन् 2019) कला की जरूरत. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।*
- *शुक्ला, परशुराम (सन् 2017) बुन्देलखण्ड का साहित्य कला और संस्कृति नई दिल्ली आराधना ब्रदर्स प्रकाशन।*
- *प्रभाकर, एम एल (सन् 2017) लोक कवि–ईसुरी. उत्तर प्रदेशः आशा प्रकाशन.*
- *रणेंद्र. (सन् 2013) गायब होता देश. नई दिल्लीः पेंग्विन प्रकाशन।*
- *नावरिया, अजय (सन् 2016) उधर के लोग. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।*
- *सिंघानिया, नितिन (सन् 2023) भारतीय कला एवं संस्कृति. मध्यप्रदेशः मैकग्रो हिल प्रकाशन।*
- *अग्रवाल, वासुदेवशरण.(2019) कला और संस्कृति, नई दिलीः लोकभारती प्रकाशन।*
- *इंटरनेट में https%@@lab-cccb-org@en@the&i&in&the&internet@*

CITATION:

Srivastava, M., & Singh, S. (2025). लोक कथाओं के संवर्धन में मीडिया की भूमिका का अध्ययन (हिंदी भाषी राज्यों के विशेष सन्दर्भ में). INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS IN SOCIAL SCIENCES, 1(2), 87–83.